Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. 12, Issue No. 2, January-2017, ISSN 2230-7540

सातवें दशक के उपन्यासों में नारी-चेतना का मूल्यांकन

Pratima[1]* Dr. Praveen Kumar[2]

[1] Researcher, Ph.D. (Hindi), OPJS University, Churu, Rajasthan

[2] Research Director, Hindi Department, OPJS University, Churu, Rajasthan

सार – नारी के घर के और बाहर निकलकर बाहरी क्षेत्रों में पर्दापण करने की मान्यता ने उसके सामने घर व बाहर की समन्वित व्यक्तित्व की समस्या खड़ी कर दी। बाहरी क्षेत्रों में उसके जीवन में वह परिवेश इतना हावी हो गया कि वह उतरोत्तर अपने परिवार से विमुख होती गयी। अधिकांश उपन्यासों में नारी का चरित्र समाज की उन सभी रूढ़ियों से आदर्शों से आतंकित महसूस करती है। जहाँ वह अपने जीवन के अन्तिम क्षणों तक परिवार में रूतबा पाने की निरर्थक कोशिश कर अपने आप को पदपद पर आत्महत्या करती है। चाहे उनके व्यक्तित्व में कितनी बौद्धिकता हो फिर भी पारिवारिक दृष्टि से उनके व्यक्तित्व में एक घुटन व टूटन रहती है। एक स्थिति ऐसी आती है जब नारी सुलभ व्यक्तित्व उनके साथ सामंजस्य स्थापित करने में विवशता अनुभव करता है। इस स्थिति में नारी न तो घर की जिम्मेदारियों को वहन कर पाती है और न ही बाह्य क्षेत्रों में अपने अस्तित्व को कायम कर पाती है।

----------X----------

आज नारी का विभिन्न स्तरों पर संवैधानिक और व्यवहारिक समानता में बहुत फासला है। इस अध्याय में नारी चरित्रों को तीन स्तरों और वर्गों में विभाजित किया है। इन वर्गों व स्तरों का आधार शिक्षा, पद व आर्थिक स्थिति के अनुरूप किया गया है।

एक वर्ग वह है जहाँ नारी ने अपनी पहचान बनानी है। वह डॉक्टर, प्रशासनिक अधिकारी, नेता के रूप में प्रस्तुत है। विद्रोही व रूढ़ियों को खुली चुनौती देती हुई महत्वाकांक्षी भी है।

दूसरी और मध्य वर्ग है जहाँ नारी दोहरे मापदण्डों से जूझ रही है। समाज की झूठी इजत के कारण वह अनेक प्रकार के कष्टों को सह रही है। शिक्षित होने के बावजूद वह समाज की झूठी रूढ़ियों को मान रही है। उसने अपनी बौद्धिकता को स्वयं से अलग कर दिया है। फिर भी समाज के अनुरूप स्वयं को ढालना चाह रही है।

वर्ग चेतना ही वह आधारशिला है जो उस वर्ग को चेतनाशील और संगठित रखती है। "वर्ग चेतना वर्गीय सदस्यों की समानता की भावना के आधार पर उत्पन्न होती है, जो वर्ग को क्रियाशील एवं संगठित बनाती है। यह चेतना समानता की भावना, सौपानक्रम में उच्च स्तरीय व्यक्तियों से हीनता की भावना तथा पर निर्भर करती है। इसके आधार पर वर्ग में आस्था एवं स्वाभिमान की सृष्टि होती है और वर्ग भावना सक्रिय रहती है।[1]

उच्चमध्य वर्ग के पात्र अन्तर्मुखी होते जाते हैं। इनमें चेतना अधिक सक्रिय होती है।

1. उच्च मध्यवर्ग:

शिक्षा, पद व आर्थिक स्थिति के आधार के अनुरुप उपन्यासों के उच्च मध्यवर्ग के उन नारी पात्रों को अंकित किया गया है जो जीवन्त है। शिक्षित होने के कारण कहीं समाज व स्वयं के व्यवहार की खाई को पाटा है। तो कहीं अहं की तीव्रता ने उनके स्वयं के परिवारों को विघटित भी किया है। स्वयं को अनेक सामाजिक रुढ़ियों व नियमों के बावजूद शिक्षा पर कहीं आँच नहीं आने दी। आर्थिक दृष्टि से देखा जाये तो इन नारी पात्रों की स्थिति सुदृढ़ है इन चरित्रों के जीवन में रोजी-रोटी की समस्याओं ने नहीं घेरा है। बल्कि उन्हें चरित्र विरासत में मिला है। उनकी भावनाएँ, संवेदनाएँ भिन्न हैं। वर्ग चेतना ही समाज व्यवस्था को कायम करती है।

उच्च मध्यवर्गीय पात्रों में प्रमुख हस्ताक्षर है 'काली आँधी' की नायिका मालती देवी, 'ठीकरे' की मंगनी की नायिका महरुख, 'शाल्मली' उपन्यास की नायिका स्वयं शाल्मली तीसरी सत्ता की लेडी डाक्टर शीला भट्टारिका उपन्यास की नायिका: इन

www.ignited.in

सभी चरित्रों के मूल्यांकन हेतु निम्न परिदृश्यों की कल्पना की है।

1.1 रुढ़िवादी और विद्रोही चरित्र:

रुढ़िवादी और विद्रोही चरित्र की परिकल्पना में सर्वप्रथम समाज द्वारा रुढ़ियों और उनके विदोही चरित्र दोनों शाल्मली उपन्यास में दृष्टिगोचर होते हैं।

शाल्मली उपन्यास में शाल्मली के माध्यम से लेखिका ने भारतीय समाज के संस्कारों को मानने वाली एक ऐसे चरित्र के रूप में स्वयं शाल्मली की रचना की है कि विवाह के फैसले से लेकर अन्त तक वह समाज की मर्यादाओं को निभाती है। शाल्मली का विवाह पिता की इच्छानुसार हुआ। पढ़ने की बेहद शौकिन शाल्मली ने विवाह के बाद भी अपनी शिक्षा को बंद नहीं किया। विवाहोपरान्त उसका प्रशासनिक सेवा में चुनाव होने के बाद भी वह अपने घर परिवार की मर्यादा व जिम्मेदारियों को भली प्रकार से ओढ़े रहती है। किन्तु पति के आगे प्रत्येक वस्तु के लिए हाथ पसारना उसे कभी पसन्द नहीं। वह प्रारम्भ से ही इसका खुला विरोध करती है। उसकी सोच है कि यदि वह कुछ पायी तो घर परिवार सम्भाल सकती है, वरना हर बात पर पति के आगे हाथ फैलाना पड़ेगा।[2]

जहाँ एक और वह समाज के नियमों में बंधकर अपने पति नरेश की प्रत्येक बात स्वीकार करती है। कई बार वह उसका खुलकर विद्रोह करना चाहती है। वह बंदूक हाथ में उठा लेती है। किन्तु नरेश कहता है चलाओ गोली, यह तुम्हारा सुहाग है इस पर शाल्मली की समस्त बौद्धिकता बिखर जाती है। वह समाज में अपनी प्रतिष्ठा दोनों रूपों में चाहती है। वहीं दूसरी ओर रुढ़ियों की शिकार 'तीसरी सत्ता' उपन्यास की डाक्टर है जो स्वयं शिक्षित होकर भी सदैव अपने बदमिजाज व शक्की पति के क्रूर व अमानवीय अत्याचारों का शिकार होती है। उसका पति उसे सदैव प्रताड़ित करता है। गिरिराज किशोर के इस उपन्यास में नारी को पढ़ा-लिखाकर भी स्वयं का रुढ़ियों में कैद होकर रह जाना हमारी बौद्धिक स्थिति को हिला डालता है।

डाक्टर स्वयं नौकरी छोड़कर घर में कैद हो जाती स्वयं के स्वाभिमान का गला घोंटकर आत्महंता का शिकार बनती है। पुरुष के अन्याय का प्रतिकार करते हुए स्वयं शहीद हो जाती है। उसकी शिक्षा उसका स्वयं का बचाव नहीं कर पाती उसका चरित्र बौना होकर रह जाता है।

1.2 आधुनिक पारम्परिक व आदर्शवादी और यथार्थवादी:

उच्च मध्यवर्ग के अधिकाश पात्र आधुनिक होने के साथ-साथ परम्पराओं से सम्पृक्त है वे स्वयं को काटना (अलग करना) नहीं चाहते। व्यक्ति समाज के नियमों और विधानों में ही अपने भविष्य से बंधा होता है। पर आधुनिक जीवन में पाश्चात्य सभ्यता और संस्कृति के प्रभाव से वैज्ञानिक और शिक्षा के प्रसार से व्यक्ति के सामाजिक बंधन ढीले पड़ गये। स्वतन्त्र चिन्तन से मानव के व्यक्तित्व के विकास में निखार आने लगा। इससे व्यक्ति की स्वातन्त्र्य की भावना का विकास हुआ।

अहं की भावना ने अधिक बल प्राप्त किया। आज के व्यक्ति का अहं सर्वत्र पुरातन परम्पराएँ, सामाजिक मान्यताएँ, रुढ़ियों और नैतिक बंधनों के प्रति आक्रोश और विद्रोह की भावना प्रकट कर रहा है। तदर्थ परम्परागत सामाजिक मूल्यों व रुढ़ियों व विघटन हो रहा है।[3] आधुनिक युग में मनुष्य की इच्छाएँ आकांक्षाएँ बढ़ने से समाज व्यवस्था पर प्रभाव पड़ा है।

पारम्परिक पारिवारिक संस्था को प्रभावित किया है। परिवार का विघटन इसी का परिणाम है। स्वयं मालती भी इसी आधुनिकता का शिकार है। नारी में अहम की प्रबल भावना उसका सबसे बड़ा शत्रु बनकर उसके समक्ष आ खड़ा हुआ है। स्त्रियों में बढ़ती शिक्षा, नौकरी के प्रति ललक, विवाह सम्बंधों में शिथिलता, परिवारों का विघटन ये सभी स्थितियाँ आज हमें आधुनिकता के नाम पर दंश दे रही है।

शाल्मली प्रशासनिक सेवा में अफसर चुने जाने के पश्चात भी अपनी वैवाहिक प्रस्थिति को सफल रूप में नहीं चला पाती उसके आगे उसकी महत्वाकांक्षाएँ है फलस्वरूप उसका परिवार बिखरते-बिखरते बचता है उसे अपने जीवन में परिवार की तरफ से घुटन ही मिलती है। कोई उसकी मानसिक स्थिति को समझने वाला नहीं होता। तीसरी सत्ता की लेडी डाक्टर भी पारिवारिक जीवन मे घुटन व बेबसी के सिवा कुछ नहीं मिलता। वास्तव में अक्षय चन्द शर्मा के शब्दों में "परम्परा रुढ़ि नहीं" यह मृत संस्कार नहीं वह भार नहीं है। वह ऊपर से ओढ़ी हुई चादर नहीं। परम्परा तो हमारी प्रेरणा है वह हमारे लिए पंख है। वह हमारी ऊर्जा है वह हमें आगे बढ़ाने वाली शक्ति है, संबल है।[4] अतः हमें यह ध्यान देना होगा कि परम्परा से आधुनिकता की यात्रा संयमपूर्वक करनी होगी क्योंकि आधुनिकता सदैव हमारे साथ रहती है। विचारों में बदलाव शिक्षा के प्रति लगाव, अपने अधिकारों के प्रति जागरुकता वास्तव में आधुनिकता है। अर्थ के पीछे महानगरीय सभ्यता के बोध से परिचालित होकर फैशन में

www.ignited.in

आधुनिक बनने का मोह हमारे स्वयं के लिए संकट उत्पन कर रहा है।

महरुख परम्परागत मुस्लिम खानदान की लीक से हटकर विचारों में आधुनिक होकर भी पारम्परिक ही रही है। सम्पूर्ण व्यक्तित्व में एक ठहराव अपने विचारों से आकर्षित करने की क्षमता महरुख में अदभूत अपनी जिन्दगी को अपने नजरिये से देखकर एक नयी पहचान कायम कर सकी है। वहीं दूसरी ओर प्रतिध्वनियाँ व्यक्ति को समाज के नियम कानून, मर्यादाओं सभी का वहन करना पड़ता है। समाज मे आदर्श व यथार्थ दोनों की अपनी विशिष्टता रहती है। जहाँ समाज में आदर्शों का वहन करना पड़ता है वहीं यथार्थ उसे कुछ सोचने, समझने के लिए बाध्य करता है। अतः हमारे सामाजिक जीवन में मूल विसंगतियों का प्रादुर्भाव होता है। सामाजिक आदर्श कुछ भी कहे किन्तु व्यक्ति का झुकाव यथार्थ पर रहता है। क्योंकि यथार्थ सदैव परिवर्तित होता रहता है। वह समाज की पुरानी रूढ़ियों व मान्यताओं को तोड़ने में कटिबद्ध रहता है। हमारे समाज में परम्परागत चले आ रहे नैतिक मूल्य परम्परायें और मान्यताएँ जिन्हें हम आदर्श के रूप में ग्रहण कर रहे थे। यथार्थवादी दृष्टि से देखें तो वे केवल मात्र रूढ़ियाँ हैं। जिसे व्यक्ति स्वीकार करना नहीं चाहता। जब जब इन रूढ़ियों और समाज द्वारा थोपे गये आदर्शों व मर्यादाओं को व्यक्ति नकारता है और नई वस्तु की स्थापना करता है तो उसे युगों से संचित शक्ति के साथ संघर्ष करना पड़ता है।[5]

2. उच्च वर्ग:

घरेलू और कामकाजी अन्तर्मुखी और वस्तुमुखी चरित्र उच्च मध्यवगीय नारी चरित्रों का झुकाव शिक्षा की और अधिक रहा है। उनमें योग्यताएँ हैं। विकसित करने की क्षमताएँ है। घर व बाहर दोनों क्षेत्र उन्होंने सम्भाल रखे है। घरेलु से तात्पर्य है कि पद प्राप्त करने के बाद भी अपने परिवार के प्रति कितनी सजगता उस पात्र में है। क्योंकि इस वर्ग में अधिकाश स्त्रियाँ पढ़-लिखकर किसी न किसी कार्य में लगी हुई है। वह अपने कैरियर के प्रति सजग है। कत्तव्य की भावना दिखलायी पड़ती है। तीसरी सत्ता की लेडी डॉक्टर कामकाजी होने पर भी घरेलु अधिक है। वह स्वभावतः ही अन्तर्मुखी चरित्र की सृष्टि करती है।

शाल्मली भी अपने कत्तव्यों के प्रति जागरुक है वह प्रशासनिक सेवा में अफसर होने के बावजूद अपने घर व पति का ध्यान रखती है। साथ ही सामाजिक मर्यादाओं का निर्वाह उसके व्यक्तित्व की विशेषता है। उसने अपने जीवन में घर व बाहर का सामंजस्य बिठा लिया है। अन्तर्मुखी चरित्र की सृष्टि लेखिका ने उसके रूप में की है। काली आन्धी उपन्यास की मालती का व्यक्तित्व राजनीति में आने से बिखरता दिखाई पड़ता है। वह अपना कर्मक्षेत्र केवल घर के बाहर तक ही सीमित रखती है।

वह चरित्र वस्तुमुखी अधिक है। अतः उसके दाम्पत्य सम्बंधों में एक टकराहट उत्पन्न हो जाती है। “शीला भट्टारिका” उपन्यास की शीला की सोच अधिक परिपक्व है। ठीकरे की मंगनी की महरुख का चरित्र शान्त, अन्तमुखी चरित्र है। सम्पूर्ण उपन्यास में वह कहीं बिखरी नहीं, टूटी नहीं एक नये आत्मबोध से परिचालित है। भारतीय संस्कार उसमें है। कामकाजी होने के बाद भी वह पूर्णतः घरेलु ही है। क्योंकि चेतना अधिक सक्रिय रही है। उनमें अहम की भावना प्रबल होती है।

3. मध्य वर्ग:

शिक्षित और अशिक्षित, पारम्परिक और विद्रोही:

मध्य वर्ग में वर्ग चेतना का रूप सबसे कम लक्षित होता है। इसके मूल में व्यवसायिक मित्रता, आर्थिक स्थिति और भूमिका में भिन्नता है। इस वर्ग में मध्यम श्रेणी के चरित्रों को लिया गया है। इस वर्ग में वर्ग चेतना अन्तर्मुखी हो जाती है।[6] इन पात्रों के पास साधन सीमित होते है और अधिक से अधिक अच्छे ढंग से जीना चाहता है। स्वभाव से महत्वाकांक्षी होते हैं। शिक्षा के प्रति झुकाव इस वर्ग का मूल आग्रह है। एक और उच्च वर्ग अपनाने की होड़ और दूसरी और निम्न वर्ग से बचने की चेष्टा। इस प्रकार स्वयं ही अधिक अन्तर्मुखी है। कर्करेखा उपन्यास की तनु ऐसी ही पात्र है जो अर्थ के अभाव में संज्ञा शून्य होती दिखलाई पड़ती है। वह शिक्षित है फिर भी भारतीय संस्कारों के पारस्परिक स्वरूप को समझने की कोशिश करती है।

शेषयात्रा उपन्यास की अनुष्का प्रणव के साथ प्रणय बंधन में बंधती है। शिक्षित होने के बावजूद उसमें चेतना का धीरे-धीरे विकास परिलक्षित होता है। अन्धेरा-उजाला उपन्यास की प्रगति भी विचारों से सजग है। शिक्षित होने के कारण उसमें समाज के संस्कारों व मूल्य में चेतना जागृत करती है। वह पोराणिक मान्यताओं का नूतन सन्दर्भ देकर कार्य में लगती है। शेफाली उपन्यास में शेफाली शिक्षित है। परन्तु भारतीय संस्कृति की परम्पराओं को मानने से स्पष्ट इन्कार कर देती है वह अपने व्यक्तित्व को प्रमुखता देती है उसका विद्रोही स्वरूप खुलकर सामने आता है।

www.ignited.in

"शेषयात्रा" उपन्यास की अनुष्का अन्धेरा-उजाला उपन्यास की सारिका शिक्षित व पारम्परिक है। किन्तु चेतना के विकास के कारण कहीं-कहीं ये पात्र विद्रोही हो उठते हैं। परिस्थितियों व परिवेश का हाथ उसमें प्रमुख रहता है। डॉ. मंजुला गुप्ता के अनुसार" वर्तमान युग की विषम परिस्थितियों की कड़वाहट सबसे अधिक मध्य वर्ग ने सही।[7]

इस सत्य को अन्धेरा-उजाला की प्रगति ने नवीन चेतना से समाहत की है। विवाह का पारस्परिक व विद्रोही रूप देखने को मिलता है। उसका विवाह बिना किसी दिखावट के सम्पन होता है। लेन-देन के पीछे लाखों घरों की सुख शान्ति भाप बन जाती है। इस चेतना के कारण ही संस्कार और परम्परा का सम्मिश्रण देखने को मिलता है।

घरेलू और कामकाजी, वैयक्तिकता व सामाजिकता का अन्तःसंघर्ष:

मध्यवर्ग के अधिकाश पात्र कामकाजी होने के बाद भी घरेलु जिम्मेदारियों का निर्वाह पूर्णता से करते हैं। मध्यवर्ग में अर्थ के प्रभाव के कारण कामकाजी स्त्रियों की संख्या बढ़ती है। उनमें नितान्त अन्तर्मुखता व आक्रोश दिखलाई पड़ता है। उच्चवर्ग को अपना आदर्श मानकर निरन्तर उन भौतिक साधनों को प्राप्त करने के लिए लालायित रहता है। मध्यवर्ग में कामकाजी नारियों की स्थिति अत्याधिक दयनीय रहती है। उनकी समस्याएँ भी बढ़ी हैं। नौकरी उनके जीवन के लिए मजबूरी बन गयी है। घर व बाहर दोनों क्षेत्रों का काम सम्भालते-सम्भालते वह थकने लगती है। "बेघर" उपन्यास की नायिका पर भी मानसिक परेशानियों से बचने के लिए घर से बाहर निकलती है और भागदौड़ी में अपने जीवन का सर्वस्व समाप्त कर देती है। कामकाजी नारियों में जीवन संघर्ष अधिक देखने को मिलता है। वे पढ़ी-लिखी होने के कारण जीवन जीने के विशिष्ट ढंग भावनाएँ, महत्वाकांक्षाएँ भी रखती है।

आफ्टर ऑल सिंगल हो और मेच्योर भी तो बिना ब्वायफ्रैंड के रिस्पेक्ट भी मैन्टेन नहीं होती।[8] परिस्थितियाँ ऐसी होती है कि शादी उनके लिए बहुत मुश्किल हो जाती है। मध्यवर्गीय नैतिक भावना इस वातावरण में चरमराने लगी है।

ऊषा कहती है इस मर्द जात के साथ तभी सोओ अगर माल हासिल होता हो या पोजीशन हासिल होती हो या शादी करना हो साला।[9] व्यक्ति समाज में रहते हुए भौतिक जगत के प्रभाव से दूर नहीं रह सकता और इस कारण वह उससे संघर्षरत हो उठता है। इस कारण वह अपने मस्तिष्क में उठने वाली दो विरोधी भावनाओं के मंथन से भी संघर्ष करता है, यह अन्तः संघर्ष की स्थिति वर्तमान समाज में सामान्य रूप से पाई जाती है। व्यक्ति और समाज की चेतना आंतरिक और बाह्य परिस्थितियों और समस्याओं से संघर्ष करती हुई अपना नवीन संस्करण कर रही है। इसके परिणामस्वरूप जीवन के प्रति दृष्टिकोण सामाजिक तथा वैयक्तिकता मर्यादा आदि सभी एक आधारभूत परिवर्तन के फलस्वरूप जीवन में अनेक स्वस्थ अस्वस्थ संम्भावनाएँ परिलक्षित हो रही है। अतः आज व्यक्ति सामाजिक नैतिक मूल्यों की चिन्ता न करके वैयक्तिकता उसके सम्पूर्ण व्यक्तित्व में समाती जा रही है। वैयक्तिकता और सामाजिकता के अन्तःसंघर्ष के कारण इच्छाओं और परिस्थितियाँ उनके व्यक्तित्व को वैचारिक स्तर पर दबोच लेती है व नैतिक मापदण्डों को भूलना चाहती है। "त्रिकोण" उपन्यास की लोरेन का व्यक्तित्व इसी का अंकन करता है।

4. निम्न वर्ग:

सामाजिक यथार्थ परम्पराओं का नवीनीकरण और आधुनिक बोध:

निम्न वर्ग में वे लोग अन्तर्भूत होते हैं जिनके पास निर्वाह का एकमात्र साधन है उनकी श्रम शक्ति। निम्न वर्ग का वर्तमान समाज व्यवस्था में शोषण अधिक होता है। परन्तु इस वर्ग में चेतना अधिक मात्रा में दिखाई देती है। उनका बड़ा आकार और व्यवसायिक समानता सामान्य हित एवं स्वार्थी को विकसित कर उन्हें सक्रिय बनाए रखती है।[10]

आधुनिक युग में महानगरीय सभ्यता के बोध से इनकी दिनचर्या प्रभावित हुई है। संख्या में बहुत होते हुए भी भयानक दलित जीवन जी रहे है। गांव और कस्बों से उन्हें यह महानगरीय वातावरण खींच लाता है। बड़े शहरों में जाकर व्यवस्था में बुरी तरह पिस जाते हैं।

"अनारो" उपन्यास में अनारो यथार्थ में जीवन जीती है स्वप्न और कल्पनाओं के सहारे नहीं। आधुनिकता और परम्पराओं के बीच जूझती अनारो अपने वर्ग की समस्त विदूरपताओं और संघर्षों के साथ जीवन को रेखांकित करती है। यथार्थ को वह समझती है। अनारो बच्चों को मनसपैलेटी के स्कूल में भर्ती करना चाहती है। "गंजी" का विवाह परम्पराओं के अनुरूप करती है। "सवित्तरी" उपन्यास में सवित्तरी सुन्दर सुशील कन्या है। वह भी अपने हाथ के काम के बल पर ही यथार्थ जीवन जीती है। किताबों और कल्पनाओं में नहीं।

www.ignited.in

नैतिक मूल्यों का विघटन, परम्पराओं के प्रति विद्रोह, जिजीविका और अस्तित्व का संघर्ष:

निम्न वर्ग जीवन मूल्यों व नैतिक मर्यादाओं की चिन्ता नहीं करता वह जीवन को अपने ढंग से परिचालित करना चाहता है। नैतिक मान्यताएँ उसके समझ के बाहर की वस्तु है। अपने ढंग किए गए प्रयोग ही सर्वोन्मुखी दिखाई पड़ते हैं। नारी पात्र स्वभाव से सम्बंधी है। जीने की अदम्य इच्छा इनमें कूट-कूटकर भरी हुई है। पति के द्वारा पत्नी को प्रताड़ित किये जाना, एक स्त्री होते हुए दूसरी कर लेना या अपनी स्त्री को कुछ सिक्कों के लिए किसी अन्य को बेच देना इन परिस्थितियों में नारी के पास नैतिक मूल्यों का अभाव साफ झलकता है।

"बसन्ती" उपन्यास में बसन्ती का घर से भाग जाना नैतिक मूल्यों का विघटन करता है किन्तु अनमेल विवाह के कारण वह अपने पिता का विरोध करती है और दीनू के साथ भाग जाती है। क्योंकि वह अपने अस्तित्व को समाप्त नहीं करना चाहती, अतः वह संघर्षी हो उठती है। "माटी" उपन्यास क भागवंती पुरुष द्वारा प्रताड़ित पात्र है। पुरुष वर्ग ने सदैव छलना का मार्ग अपनाया है। वही उससे गलत उपयोग करवाना चहता है। "बसन्ती" उपन्यास में दीनू बसन्ती को बरडू के हाथों बेच देता है तो वह विद्रोह कर उठती है। बसन्ती अपने आपे से बाहर हो जाती है। "तू भी हरामी, वह भी हरामी। खबरदार जो मेरे बच्चे को हाथ लगाया। बड़ा आया बेचने वाला। मेरे पेट में अपना बच्चा देकर मुझे बेचने चला था, हरामी बेशर्म बदजात।"[11]

"ढोलन कुंजकली" में ढोलने गाना गाती है। ठाकुरों को हर दृष्टि से खुश रखती है। उनके आदमी अपनी औरत के जीवन से कमा कर खाते है। अपनी पत्नी का दारु, नाच नंगापन बरदाश्त करते है।[12]

निम्नवर्गीय जीवन में पीढ़ियों का मोहभंग अस्तित्व का टूटना, वर्ग संघर्ष की समानान्तर चेतना:

समाज की वर्तमान स्थिति में वैयक्तित्व रुचि, महत्वाकांक्षा, स्वतन्त्र चेतना, अस्तित्व और अस्मिता की पहचान इन सभी कारणों से निम्नवर्गीय जीवन पर व्यापक असर देखने को मिलता है। इसके फलस्वरुप जीवन कठिनाईयों, दुखों, संघर्षों से परिपूर्ण है। इस स्थिति ने समाज में मोहभंग होने की स्थिति पैदा कर दी है। नारी आत्मनिर्भर और अथोपार्जन कर रही है। अपने परिवेश के प्रति सजग व अधिकारों के प्रति जागरुक हुई है। इस स्थिति में नारी के आत्मविश्वास को बढ़ावा मिला है और परम्परागत मान्यताओं में मोहभंग की स्थिति जागृत हुई है। निम्नवर्गीय समाज में पुरुष के बजाय नारी अधिक विद्रोहिणि है। वह समाज की नैतिक मान्यताओं रुढ़ियों व परम्पराओं को तोड़ने में अधिक सजग है। मीना साहनी के उपन्यास "बसन्ती" की पात्र बसन्ती कौर के उपन्यास "माटी" की पात्रा द्रोपदी इसका उदाहरण है। मजुल भगत के उपन्यास की अनारो अपनी जिम्मेदारियों से मुंह नहीं मोड़ती अपनी पुत्री गंजी का विवाह धूमधाम से करती है। वह अपने पति पर आश्रित नहीं रहती है। वह स्वयं कमाती है। अनेक कार्य स्वयं निपटाने की चेतना उसमें है। वह विद्रोहिणि अधिक है।

डॉ. रामकली के शब्दों में "स्वतन्त्रता के बाद व्यापक रूप से क्रान्तिकारी सामाजिक परिवर्तन घटित होने के कारण हर स्तर पर एक मोहभंग की स्थिति दिखाई देती है। मोहभंग की स्थिति में नैतिक मान्यताओं में भी परिवर्तन आया है। यह परिवर्तन एकांकी न होकर सर्वक्षेत्रीय है।[13]

खुदा सही सलामत है कि गुलाब दई भी झुकना और टूटना पसन्द नहीं करती। उसमें अपने व्यक्तित्व के प्रति चेतना है। शिवलाल उसे अपने घर से निकाल देता है। ऐसी स्थिति में भी गुलाब दई अपने अपमान को पी जाना नहीं चाहती बल्कि उसके मन में प्रतिकार की भावना है और शिवलाल की चक्की के ठीक सामने वह खोमचे की दुकान लगाकर जीविकोपार्जन करती है। वह अपने इस मूक विद्रोह के माध्यम से स्पष्ट संकेत देती है कि नारी शक्ति सम्पन है और स्वावलम्बी होकर अपने पेरो पर खड़ी हो सकती है। निम्न वर्ग के नारी पात्र अन्य वर्गों की उपेक्षा अधिक उग्र है। अपने अधिकारों के प्रति चेतना उनमें तीव्र रूप से दिखाई देती है। वे परिस्थितियों से समझौता कर जीवन यापन करने में विश्वास करना पसन्द नहीं करती। इस वर्ग की नारी झूठी शानो-शौकत में विश्वास नहीं रखती अपने कत्तव्यों के प्रति सजग किन्तु मुँहफट किसी का दबाब सहन नहीं करती।

संदर्भ सूची:

1. डॉ. विश्वम्भरदयाल गुप्त, उपन्यास का समाजशास्त्र, पृ. 171
2. नासिरा शर्मा, शाल्मली, पृ. 23
3. डॉ. मंजुला गुप्ता, हिन्दी उपन्यास समाज और व्यक्ति का द्वन्द्व, पृ.12
4. अक्षयचन्द्र शर्मा, परम्परा और आधुनिक कवि, पृ. 65

www.ignited.in

5. डॉ. मंजुला गुप्ता, हिन्दी उपन्यासः समाज और व्यक्ति का द्वन्द्व, पृ. 43

7. डॉ. विश्वम्भरदयाल गुप्त, उपन्यास का समाजशास्त्र, पृ. 171

8. डॉ. मंजुला गुप्ता, हिन्दी उपन्यास समाज और व्यक्ति का द्वन्द्व, पृ. 35

9. निरुपमा सेवती, पतझड़ की आवाजें, पृ. 22

10. डॉ. विश्वम्भरदयाल गुप्त, उपन्यास का समाज शास्त्र, पृ. 171

11. भीष्म साहनी, बसन्ती पृ. 140

12. यादवेन्द्र शर्मा चन्द्र, ढोलन कुंजकली, पृ. 73

13. रविन्द्र कालिया, खुदा सही सलामत है।

Corresponding Author

Pratima*

Researcher, Ph.D. (Hindi), OPJS University, Churu, Rajasthan